

## मृत्यु के बाद का जीवन (2 का भाग 2): इसके लाभ

रेटगि:

वविरण:

श्रेणी: [लेख परलोक मौत के बाद का सफर](#)

द्वारा: [iiie.net](#) (edited by IslamReligion.com)

पर प्रकाशति: 04 Nov 2021

अंतमि बार संशोधति: 04 Nov 2021

क़ुरआन यह भी कहता है कि सांसारिक जीवन दरअसल मृत्यु के बाद के अनंत जीवन की तैयारी है। लेकिन जो इसे अस्वीकार करते हैं वे अपने जुनून और इच्छाओं के दास बन जाते हैं, और गुणी और ईश्वर के प्रति आस्थावान लोगों का मज़ाक उड़ाते हैं। ऐसे लोग केवल मृत्यु के समय ही अपनी गलती का अनुभव करते हैं और इस संसार में एक और अवसर पाने की व्यर्थ कामना करते हैं। मृत्यु के समय उनकी दयनीय हालत, परिणाम के दनि का भय, और ईमानदारी से आस्था का नरिवाह करने वालों के लिये सुनिश्चिती अनंत आनंद का वविरण क़ुरआन के इन सुंदर छंदों में कथिा गया है।

" तब, जब उनमें से किसी को मृत्यु आती है, वह कहता है, 'मेरे पालनहार, मुझे वापस भेज दे, ताकि मैं वहाँ जो करके आया हूँ उसे ठीक कर सकूँ!' पर नहीं! वह केवल बात रह जाती है; और उनके पीछे एक रुकावट रहती है उस दनि तक जब तक वह उठाई नहीं जाती। और जब तुरही बजाई जाती है उस दनि उनमें कोई रश्ति नहीं रह जाते, न ही कोई एक दूसरे के बारे में पूछता है। फिर जनिके काम का पलड़ा भारी होता है, वे सफल हो जाते हैं। और जनिका पलड़ा हल्का होता है वे अपनी आत्मा को खो देते हैं, नरक में रहते हैं, आग उनके चेहरों को जला देती है और वे वहाँ दुखी रहते हैं।" (क़ुरआन 23:99-104)

अरब के लोगों को देखो। जुआ, शराब, जनजातीय झगड़े, लूट और हत्या उनके समाज की तब मुख्य वशिषताएँ थीं जब उन्हें मृत्यु के बाद के जीवन में वशिवास नहीं था। लेकिन जैसे ही उन्होंने एक ईश्वर में और मृत्यु के बाद के जीवन में वशिवास करना शुरू किया, वह वशि्व के सबसे अधिक अनुशासित देश बन गए। उन्होंने अपनी बुरी आदतें छोड़ दीं, मुसीबत के समय एक दूसरे के काम आने लगे, और अपने झगड़े न्याय और बराबरी के आधार पर तय करने लगे। इसी तरह, मृत्यु के बाद के जीवन को अस्वीकार करने के दुष्परिणाम न केवल मृत्यु के बाद के जीवन में होते हैं, बल्कि इस संसार में भी होते हैं। जब एक पूरा देश इसे अस्वीकार करने लगता है, तो समाज में सब तरह की बुराइयाँ और भ्रष्टाचार फैल जाता है और अंततः वह समाज नष्ट हो जाता है। क़ुरआन में 'आद', थमुद और फ़रिौन के इस दुखद अंत के बारे कुछ वसितार में बताया गया है:

"थामूद और 'आद' (जनजातियाँ) ने न्याय के दनि पर वशिवास नहीं किया। जहाँ तक थामूद का प्रश्न है, वह आकाश की बजिली से मारे गए, और 'आद', भीषण गरजती हुई हवाओं से नष्ट हो गए, जो उसने उन पर सात लंबी रातों और आठ लंबे दनिों तक चलाई, जिससे आप उन्हें लंबे लेटे हुए देख सकते थे मानो वह खजूर के गरि हुए पेड़ों के तने थे।

"तो क्या आप देखते हैं कि उनमें कोई शेष रह गया है? और किया यही पाप फ़रिौन ने और जो उसके पूर्व थे तथा जनिकी बसतियाँ औधी कर दी गयीं। उन्होंने गलतियाँ कीं और उनके पहले के लोगों ने भी कीं और उन्होंने अपने ईश्वर के पैगंबर के वरिद्ध वदिरोह किया, तो उसने उन्हें अपनी मजबूत पकड़ में जकड़ लिया। और देखो, पानी जब बढ़ा, तो हमने एक भागते हुए जहाज में तुमको शरण दी ताकि हमारे कारण तुम्हें और दूसरे सुनने वालों को यह याद रह सके।

"इसलिए जब तुरही एक साँस में बजाई जाती है और भूमि और पर्वत उठा दिए जाते हैं और एक अकेले प्रहार से चकनाचूर कर दिए जाते हैं, तब उस दनि, आतंक फैलेगा, और आकाश टूट जाएगा, और वह दनि बहुत दुर्बल होगा।

"और फ़रि उसके लयि जिसके दायें हाथ में उसकी कतिब दी जाएगी, वह कहेगा 'यह लो, यह कतिब लो और इसे पढ़ो! मुझे वशिवास था कि मैं मलिने वाला हूँ अपने हसिब से।' तो एक ऊंचे बाग में उसका मनोहारी जीवन होगा, उसके फल पास में होंगे ताकि एकत्र कर सको। (उनसे कहा जायेगा:) खाओ तथा पयिओ आनन्द लेकर उसके बदले, जो तुमने किया है वगित दनिों (संसार) में।

"और जसि दया जायेगा उसका कर्मपत्र उसके बायें हाथ में, तो वह कहेगा: हाय! मुझे मेरा कर्मपत्र दया ही न जाता! तथा मैं न जानता कि क्या है मेरा हसिब! काश मेरी मौत ही नरिणायक होती! नहीं

काम आया मेरा धन। मुझसे समाप्त हो गया, मेरा प्रभुत्व। " (क़ुरआन 69:4-29)

पहला,

दूसरा,

तीसरा,

चौथा,

पाँचवा,

इस लेख का वेब पता:

<https://www.islamreligion.com/index.php/hi/articles/274>

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।